पाठ्य सामग्री

Geography B.A. Part -II (Hon's)

Paper-III

Unit -II

भारत में सिंचाई संसाधनों का वर्णन करें।

Unit-II **Irrigation in India** (भारत में सिंचाई) (5)

जब कृषि में आवश्यकता पड़ने पर कृत्रिम रूप से पानी दिया जाता है, तब उसे सिंचाई कहते हैं। फील्ड (field) :- के शब्दों में — "कृषि उसे से जहाँ आवश्यक हो, कृत्रिम रूप से पानी देने को सिंचाई कहते हैं।"

इससे पता चलता है कि अगर फसल की सिंचाई वर्षा से होता है तो उसे सिंचाई नहीं कहते।

डॉ० एच० एण्डरसन के अनुसार :- "सिंचाई के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "कृषि में प्रकृति द्वारा प्रदत्त जल से कमी पूरी नहीं होती है, उसको पूरा करना ही सिंचाई का उद्देश्य है।"

Importance of Irrigation (सिंचाई का महत्व)

भारत एक कृषि प्रधान देश है, अतः यहाँ की लगभग 80% जनसंख्या के जीविकोपार्जन का एक मात्र साधन कृषि ही है। भारत में वर्षा अनिश्चित तथा अनियमित-सी रहती है मानसून कभी जल्दी आ जाती है तो कभी देर से। भारत में वर्षा केवल 4 माह ही होती है तथा अन्य महीने प्रायः शुष्क ही रहती हैं। भारत में इन चार महीनों में भी वर्षा का वितरण सही नहीं है। किन्हीं प्रदेशों में वर्षा आवश्यकता से अधिक होती है तो कई प्रदेशों में वर्षा आवश्यकता से बहुत कम होती है। ऐसी दशा में कम वर्षा वाले भाग में सिंचाई की अत्यधिक आवश्यकता होती है।

नोल्स (Knowles):- के अनुसार :- "सिंचाई ने जीवन की रक्षा का प्रबंध किया है, सिंचाई ने अधिक उपज, कृषि क्षेत्र में तथा तथा उससे प्राप्त आय में वृद्धि की है।"

चार्ल्स ट्रेवेलियन के अनुसार :- "भारत में सिंचाई ही सबकुछ है, पानी भूमि से मूल्यवान है, क्योंकि जब भूमि पर जल पड़ता है, तो उर्वरा भूमि में कम से कम छः गुणा वृद्धि होती है और वह उस भूमि भी उपजाऊ हो जाती है, जो बंजर थी।"

भारत में सिंचाई के साधन

योजना आयोग ने सिंचाई के आधार पर सिंचाई के साधनों निम्न तीन वर्गों में विभक्त किया गया है।

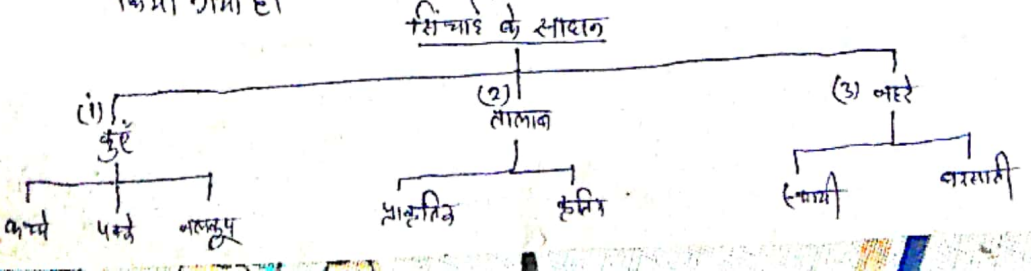

सिंचाई के साधन

वर्तमान समय में, देश में सिंचाई में विभिन्न साधनों का योगदान किस प्रकार है:-

स्रोत के अनुसार सिंचित क्षेत्र

सिंचाई के साधन	सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत
नहरें	41.8
कुएँ	22.9
ट्यूबवेल	16.6
तालाब	12.1
अन्य साधन	6.6
योग	100.0

Map
आर्थिक एवं वाणिज्य भूगोल से
Page -119

भारत में सिंचित क्षेत्र

(1) उत्तर प्रदेश :- पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कम वर्षा होती है। अतः इस भाग में सिंचाई का विशेष महत्त्व है। उत्तर प्रदेश की कुल कृषि योग्य भूमि के लगभग 25% भाग नहरों द्वारा सिंचाई होता है। यहाँ की प्रमुख नहरें ऊपरी गंगा, निचली गंगा नहर, पूर्वी यमुना नहर, आगरा नहर, शारदा नहर, बेतवा नहर, चम्बल नहर, सोन नहर, घाघरा नहर, घग्घर नहर आदि हैं।

(2) पंजाब :- पंजाब की आर्थिक उन्नति का आधार वहाँ की नहरें हैं। देश विभाजन से पूर्व विश्व की सबसे लम्बी नहर इसी राज्य में थी। यहाँ की प्रमुख नहर - पश्चिमी यमुना नहर, सरहिन्द नहर, अपर बारी दोआब नहर, बीकानेर नहर, नांगल बाँध की नहरें आदि हैं।

(3) तमिलनाडु :- यहाँ के प्रमुख नहर पेरियार बाँध की नहरें, निचली भवानी योजना की नहरें, मेट्टूर बाँध की नहरें, कावेरी डेल्टा की नहरें

(4) मध्य प्रदेश :- मध्य प्रदेश की धरातलीय रचना नहरों के निर्माण में बाधक है यही कारण है कि यहाँ अधिकतर सिंचाई नलकूपों, कुओं और तालाबों द्वारा होती है। यहाँ की प्रमुख नहरें - महानदी नहर, बैनगंगा नहर, तन्दुला नहर, चम्बल की नहरें

(5) महाराष्ट्र :- महाराष्ट्र की प्रमुख नहरें - भण्डारदरा बाँध की नहरें, मूठा की नहरें, नीरा की नहरें गोदावरी की नहरें

(6) बिहार :- बिहार राज्य में पर्याप्त वर्षा होती है। इस राज्य के केवल पश्चिमी भाग में कम वर्षा होती है जिसे सिंचाई की आवश्यकता होती है यहाँ की प्रमुख नहरें - पूर्वी सोन नहर, पश्चिमी सोन नहर, त्रिवेणी नहर, कोसी योजना आदि।

(7) पश्चिम बंगाल :- इस राज्य में वर्षा की अधिकता के कारण नहरों की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है परन्तु पश्चिमी-उत्तरी भागों में खेती को सफल बनाने के लिए नहरों का निर्माण किया गया है। यहाँ की प्रमुख नहरें - मिदनापुर नहर, एडन नहर, डामोदर नहर, तिलपाड़ा बाँध की नहर

(8) आन्ध्र प्रदेश :- यहाँ की प्रमुख नहरें :- गोदावरी डेल्टा की नहरें, कृष्णा डेल्टा की नहरें, तुंगभद्रा की नहरें, रामपद सागर योजना, कृष्णा बैरेज प्रोजेक्ट, कृष्णा पैनार परियोजना आदि।

(9) राजस्थान :- राजस्थान का अधिकांश भाग शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क मरुस्थल है, जहाँ लगभग 25 Cm वर्षा होती है अतः यहाँ सिंचाई के द्वारा ही कृषि की जाती है। यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है अतः जिन भागों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है वहाँ अच्छी कृषि होती है। यहाँ की प्रमुख नहरें - राजस्थान नहर, बीकानेर या गंग नहर।

Scanned with CamScanner